नोटबंदी ने तोड़ी भारत की कमर...!

- अरुण पांडे

ना खुदा ही मिला न विसाल-ए-सनम। करीब तीन साल में नोटबंदी से कुछ यही हासिल हुआ है। न जीडीपी ग्रोथ बढ़ी, न जाली नोट छापने का गोरखधंधा थमा और ना ही हम कैशलेस इकोनॉमी बनने का लक्ष्य हासिल कर पाये।। हाल ये है कि ताजा जीडीपी ग्रोथ 6 साल में सबसे खस्ता हालत में है। नए नोटों में नकली नोटों की तादाद में 100 परसेंट से ज्यादा बढ़ोतरी हुई है और नकदी करीब 6.5 लाख करोड़ बढ़ गई है।

अब आपको फ्लैशबैक में ले चलते हैं... 8 नवंबर 2016 की रात 8 बजे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भाषण। जी हां - वही भाषण जिसमें पीएम मोदी ने एक झटके में पांच सौ और हजार के नोट बंद करने का ऐलान किया था। उस वक्त उन्होंने दावा किया था कि सिस्टम में फैले नकली नोट खत्म करने, जीडीपी ग्रोथ बढ़ाने और इकोनॉमी को कैशलेस बनाने के लिए ये सब कर रहे हैं ताकि कालेधन पर लगाम लग सके।

अब नतीजा देखिए.. नोटबंदी की वजह से एक बार इकोनॉमी की कमर ऐसी टूटी की हालात सुधर ही नहीं रहे हैं। 2015-16 में जो जीपीडी ग्रोथ करीब 8 परसेंट थी, वो घटते-घटते वित्तीय साल 2019 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में घटकर सिर्फ 5 परसेंट रह गई। मैन्युफैक्चरिंग यानी फैक्ट्री की ग्रोथ सिर्फ आधा परसेंट रह गई। मारुति, महिंद्रा, ह्युंदई सबने अपना प्रोडक्शन घटा दिया, क्योंकि ऑटो सेक्टर की ग्रोथ 20 साल के सबसे निचले स्तर पर है।

कहां तो वादा था कि नोटबंदी से नक्सलियों, काला धन रखने वालों, नकली और जाली नोट तैयार करने वालों की कमर टूट जाएगी, हालात उलट हो गये - नोटबंदी ने जीडीपी ग्रोथ और कैशलेस इकनॉमी की ही कमर तोड़ डाली।

नोटबंदी का विनाशकारी असर, जीडीपी स्वाहा

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा था कि नोटबंदी इकोनॉमी को तबाह करने वाली ऐतिहासिक भूल साबित होगी। इससे जीडीपी 2 परसेंट तक गिरेगी। नोटबंदी के पहले 8 परसेंट की रफ्तार से दौड़ रही जीडीपी ग्रोथ अब अप्रैल-जून में 5 परसेंट तक आ गई है यानी 6 साल में सबसे खराब।

नकली नोट बनाना आसान हुआ

नोटबंदी के वक्त एक वादा ये भी था कि सिस्टम में करोड़ों रुपए के जाली नोट एक झटके में खत्म हो जाएंगे। लेकिन रिजर्व बैंक की ताजा सालाना रिपोर्ट तो कहती है बंद होने के बजाए जाली नोट साल दर साल बढ़ने लगे हैं। 500 के नए नोट पिछले साल के 121 परसेंट बढ गए हैं। सेफ्टी फीचर के साथ दावा था कि 2000 रुपए के नए नोट के जाली नोट तैयार करना बहुत मुश्किल होगा लेकिन उसमें जाली नोटों की तादाद करीब 22 परसेंट बढ़ गई है। हैरानी की बात है कि जालसाज धड़ल्ले से 2000 रुपए के नोट की तरह पहली बार उतारे गए 200 रुपए के नोट के नकली नोट तैयार कर पा रहे हैं।

रिपोर्ट खास तौर पर टेंशन इसलिए बढ़ा रही है क्योंकि जाली नोट इस सफाई से बनाए जा रहे हैं कि इसमें से सिर्फ 94 परसेंट ही बैंकों की पकड़ में आ पाते हैं और करीब 6 परसेंट तो रिजर्व बैंक तक पहुंच जाते हैं।

नोटबंदी से कैशलेस इकोनॉमी का दावा भी फेल

नोटबंदी पर सरकार का दूसरा दावा भी बुरी तरह से फेल हो गया है। नोटबंदी का बड़ा लक्ष्य डिजिटल भुगतानों को बढ़ावा देना और नकदी का लेन देन कम करना बताया गया था। लेकिन नवंबर 2016 में करीब पौने 15 लाख करोड़ रुपए की नकदी अब नोटबन्दी के दो साल 9 महीने के बाद 21 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा पहुंच गई है।

नोटबंदी के बाद मन की बात में 27 नवंबर, 2016 को नरेंद्र मोदी ने नोटबंदी को 'कैशलेस इकॉनमी' के लिए ज़रूरी बताया था लेकिन कैश इतना बढ़ गया है मतलब कैशलेस इकोनॉमी का दावा भी फेल हो गया।

टैक्स वसूली लक्ष्य से बहुत दूर

टैक्स वसूली में कमी भी इकोनॉमी का बुरा हाल बयां करती है। जीएसटी कलेक्शन के मोर्चे पर बुरी खबर है। 2018-19 में लक्ष्य से 1,62,300 करोड़ रुपए कम वसूली हुई है। इनकम टैक्स वसूली 56,300 करोड़ रुपए कम हुई है।

सबसे हैरान परेशान करने वाली बात ये है कि प्रधानमंत्री मोदी से लेकर वित्तमंत्री तक सभी यही कह रहे हैं कि मामूली संकट है जल्द ठीक हो जाएगा। वादा 5 साल में 5 ट्रिलियन की इकोनॉमी बनाने का है लेकिन कैसे बनेगी सरकार में बैठे किसी को समझ नहीं आ रहा है। बजट के बाद शेयर बाजार में भारी गिरावट आ चुकी है, विदेशी निवेशक पैसा निकाल रहे हैं, रुपया रिकॉर्ड निचले स्तर के आसपास है। कुल मिलाकर इकोनॉमी की तस्वीर डराने वाली है। 2016 में रफ्तार वाली इकोनॉमी को नोटबंदी करके जिस तरह ब्रेक लगाया गया वो दोबारा स्पीड पकड़ ही नहीं पा रहे हैं।

कुल मिलाकर सार यही है कि नोटबंदी हर तरीके से - हर लिहाज से, भारत वर्ष के लिए विनाशकारी फैसला और एतिहासिक भूल साबित हुई है। जाली नोट के चलन में बेतहाशा वृद्धि, कैश फ्लो का बढ़ जाना और जीडीपी का गर्त में चले जाना - इससे ज्यादा और क्या प्रमाण चाहिए--!

(लेखक: आर्थिक विषयों के जानकार पत्रकार हैं)

(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।